तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ प्रयोजन - भावना

अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम् ।।९ ।।

अर्थ - मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान - ये पाँच (ज्ञानम्) ज्ञान हैं।

कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ॥ १० ॥

अर्थ - [तत्] उपरोक्त पाँचों प्रकार के ज्ञान ही [प्रमाणे] प्रमाण (सच्चे ज्ञान) हैं।

परोक्ष प्रमाण के भेद

आद्ये परोक्षम् ॥११॥

अर्थ - [आद्ये] प्रारम्भ के दो अर्थात् मतिज्ञान और श्रुतज्ञान [परोक्षम्] परोक्ष प्रमाण हैं।

अध्याय १: सूत्र १२ - प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद

प्रत्यक्षमन्यत् ॥ १२ ॥ - सूत्र का सिद्धांत

अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान, विकल–प्रत्यक्ष हैं तथा केवलज्ञान, सकल प्रत्यक्ष है। [प्रत्यक्ष = प्रति+अक्ष] 'अक्ष' का अर्थ आत्मा है। आत्मा के प्रति जिसका नियम हो, अर्थात् जो परनिमित्त–इन्द्रिय, मन, आलोक (प्रकाश), उपदेश आदि से रहित आत्मा के आश्रय से उत्पन्न हो, जिसमें दूसरा कोई निमित्त न हो,ऐसा ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान कहलाता है।

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --	९	१
कौन से ज्ञान प्रमाण है ?	१०	१
परोक्ष एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद	११-१२	२
मतिज्ञान के दूसरे नाम	१३	१
मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त -	१४	१
मतिज्ञान के क्रम के भेद तथा उनका स्वरूप	१५-१९	५
श्रुतज्ञान का वर्णन, उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद	२०	१

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र १३

मतिज्ञान के दूसरे नाम

मति:स्मृति:संज्ञाचिंताभिनिबोध इत्यनर्थांतरम् ॥ १३ ॥

अर्थ - [मति] मति, [स्मृतिः] स्मृति, [संज्ञा] संज्ञा, [चिंता] चिन्ता, [अभिनिबोध] अभिनिबोध, [इति] इत्यादि, [अनर्थांतरम्] अन्य पदार्थ नहीं हैं, अर्थात् वे मतिज्ञान के नामान्तर हैं।

अध्याय १: सूत्र १३ - मतिज्ञान के दूसरे नाम

मतिःस्मृतिःसंज्ञाचिंताभिनिबोध इत्यनर्थांतरम् ॥ १३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

- यद्यपि इन सब में अर्थभेद है, तथापि प्रसिद्ध रूढ़ि के बल से वे मति के नामान्तर कहलाते हैं।
- उन सबके प्रगट होने में मतिज्ञानावरणकर्म का क्षयोपशम निमित्तमात्र है, यह लक्ष्य में रखकर उसे मतिज्ञान के नामान्तर कहते हैं।

मतिज्ञान के दूसरे नाम

- मति
- स्मृति
- संज्ञा
- चिन्ता
- अभिनिबोध
- इत्यादि

मतिःस्मृतिःसंज्ञाचिंताभिनिबोध इत्यनर्थांतरम् ॥ १३ ॥ - ' मति ' नाम भेद

- **मति** – मन अथवा इन्द्रियों से, वर्तमानकालवर्ती पदार्थ को अवग्रहादिरूप साक्षात् जानना, सो मति है।

अध्याय १: सूत्र १३ - मतिज्ञान के दूसरे नाम

मतिःस्मृतिःसंज्ञाचिंताभिनिबोध इत्यनर्थांतरम् ॥ १ ३ ॥ - ‘ स्मृति ’ नाम भेद

- **स्मृति** – पहले जाने हुए या अनुभव किए हुए पदार्थ का वर्तमान में स्मरण आना, सो स्मृति है।

मतिःस्मृतिःसंज्ञाचिंताभिनिबोध इत्यनर्थांतरम् ॥ १३ ॥ - ‘ संज्ञा ’ नाम भेद

- **संज्ञा** – का दूसरा नाम प्रत्यभिज्ञान है। वर्तमान में किसी पदार्थ को देखने पर ‘यह वही पदार्थ है जो पहले देखा था’, इस प्रकार स्मरण और प्रत्यक्ष के जोड़रूप ज्ञान को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा [प्रत्यभिज्ञान] [१]

- एकत्व प्रत्यभिज्ञान
- सादृश्य प्रत्यभिज्ञान
- विलक्षण प्रत्यभिज्ञान
- प्रतियोगी प्रत्यभिज्ञान

[१] तत्त्वार्थमणिप्रदीप , प्रथम संस्करण , डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

अध्याय १: सूत्र १३ - मतिज्ञान के दूसरे नाम

मति:स्मृति:संज्ञाचिंताभिनिबोध इत्यनर्थांतरम् ॥ १३ ॥ - ' चिन्ता ' नाम भेद

- **चिन्ता** – चिन्तवनज्ञान अर्थात् किसी चिह्न को देखकर 'यहाँ उस चिह्नवाला अवश्य होना चाहिए' इस प्रकार का विचार, चिन्ता है। इस ज्ञान को ऊह, ऊहा, तर्क अथवा व्याप्तिज्ञान भी कहते हैं।

अध्याय १: सूत्र १३ - मतिज्ञान के दूसरे नाम

मति:स्मृति:संज्ञाचिंताभिनिबोध इत्यनर्थांतरम् ॥ १३ ॥ - ‘ अभिनिबोध ’ नाम भेद

- **अभिनिबोध** – स्वार्थानुमान, अनुमान, उसके दूसरे नाम हैं। सन्मुख चिह्नादि देखकर उस चिह्नवाले पदार्थ का निर्णय करना, सो ‘अभिनिबोध’ है।

अभिनिबोध [अनुमान] [1]
- स्वार्थानुमान
- परार्थानुमान

[1] तत्त्वार्थमणिप्रदीप , प्रथम संस्करण , डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

अध्याय १: सूत्र १३ - मतिज्ञान के दूसरे नाम

मति:स्मृति:संज्ञाचिंताभिनिबोध इत्यनर्थांतरम् ॥ १३ ॥ - सूत्र से सिद्धि

- यह सूत्र सिद्ध करता है कि जिसने आत्मस्वरूप का यथार्थ ज्ञान नहीं किया हो, वह आत्मा का स्मरण नहीं कर सकता;
- क्योंकि स्मृति तो पूर्वानुभूत पदार्थ की ही होती है, इसीलिए अज्ञानी को प्रभुस्मरण (आत्मस्मरण) नहीं होता;

अध्याय १: सूत्र १३ - मतिज्ञान के दूसरे नाम

मति:स्मृति:संज्ञाचिंताभिनिबोध इत्यनर्थांतरम् ॥ १३ ॥ - सूत्र से सिद्धि

- किन्तु 'राग मेरा है' ऐसी पकड़कर स्मरण होता है, क्योंकि उसे उसका अनुभव है;

- इस प्रकार अज्ञानी जीव, धर्म के नाम पर चाहे जो कार्य करे, तथापि उसका ज्ञान मिथ्या होने से उसे धर्म का स्मरण नहीं होता, किन्तु राग की पकड़ का स्मरण होता है।

अध्याय १: सूत्र १३ - मतिज्ञान के दूसरे नाम

मति:स्मृति:संज्ञाचिंताभिनिबोध इत्यनर्थांतरम् ॥ १३ ॥ - मतिज्ञान के भेद

मतिज्ञान के भेद

- स्वसंवेदन
  - स्वानुभव प्रत्यक्ष
- बुद्धि
  - मति का प्रकार [1]
- मेधा
  - स्मृति का प्रकार [1]
- प्रतिभा
  - संज्ञा का प्रकार [1]
- प्रज्ञा
  - चिंता का प्रकार [1]
- आदि

[1] सर्वार्थसिद्धि वचनिका , ग्रन्थकार: पं॰ जयचन्दजी छाबडा; भाषा अनुवादक: धनकुमार जैन

अध्याय १: सूत्र १३ - मतिज्ञान के दूसरे नाम

मतिःस्मृतिःसंज्ञाचिंताभिनिबोध इत्यनर्थांतरम् ॥ १३ ॥ - मतिज्ञान के भेद

- **स्वसंवेदन** – सुखादि अन्तरङ्ग विषयों का ज्ञान, स्वसंवेदन है।
- **बुद्धि** – बोधनमात्रत्व बुद्धि है। बुद्धि, प्रतिभा, प्रज्ञा आदि मतिज्ञान की तारतम्यता (हीनाधिकता) सूचक ज्ञान के भेद हैं।

अध्याय १: सूत्र १३ - मतिज्ञान के दूसरे नाम

मति:स्मृति:संज्ञाचिंताभिनिबोध इत्यनर्थांतरम् ॥ १३ ॥ - अनुमान के प्रकार

- अनुमान के प्रकार
  - मतिज्ञान
    - साधन के देखने पर स्वंय साध्य का ज्ञान होना, सो मतिज्ञान है।
    - चिह्नादि से उसी पदार्थ का अनुमान होता है, सो मतिज्ञान है।
  - श्रुतज्ञान
    - दूसरे के हेतु और तर्क को सुनकर जो अनुमान होता है, सो श्रुतानुमान है।
    - चिह्नादि से अन्य पदार्थ का अनुमान होता है, सो श्रुतानुमान है।

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --	९	१
कौन से ज्ञान प्रमाण है ?	१०	१
परोक्ष एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद	११-१२	२
मतिज्ञान के दूसरे नाम	१३	१
मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त -	१४	१
मतिज्ञान के क्रम के भेद तथा उनका स्वरूप	१५-१९	५
श्रुतज्ञान का वर्णन, उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद	२०	१

मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त

तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥ १४ ॥

अर्थ - [इन्द्रियानिन्द्रिय] इन्द्रियाँ और मन [तत्] उस मतिज्ञान के [निमित्तम्] निमित्त हैं।

जिनवाणी स्तुति